

५२१४

कथा पुराणे

H3/1814

८९०

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळे.

— : हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह : —

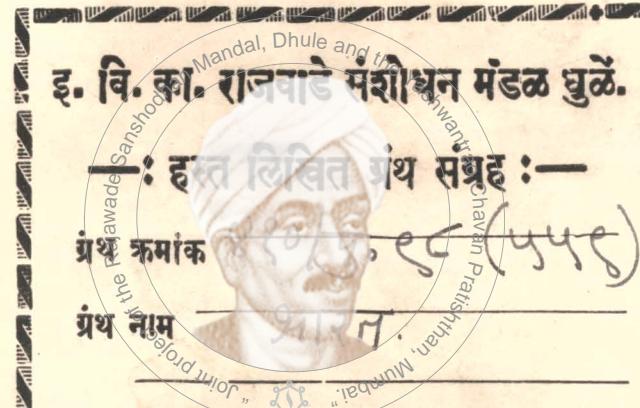
ग्रंथ  
क्रमांक

ग्रंथ  
नाम

८८

(५५६)

विषय — कथा-पुराणे.



वि० ए० ल० १० ॥ जी मुनी मरि ला विराट नगरी ॥ मल्ल प्रभु पछ विले ॥ का० अ०  
दि गांजरी ॥ वत्ते पावडी हुस्तना पुरी ॥ कौरव समेजन मुरेवं ॥ ७ ॥ 2  
जागवी कौरवास क छिका ॥ बछदर मान्दीयं सारिखा ॥ जी मुनि  
धाडिला पर लोका ॥ बावतुम ते पहला ॥ ८ ॥ कौरव हृषि गति कै से  
काया ॥ बछव भी महैरि का ॥ कुनिहृषि निजनिश्चये ॥  
जाग पांडव ते ठाँडँ ॥ ९ ॥ पाकव ये इल सहजे ॥ आतं उतावे  
बन कीजे ॥ पांडव बद्धा चुनिकाजे ॥ औ से चिपु दं घडती ला ॥ १० ॥  
दुर्योधन दुर्या सना ॥ शालव कर कीचि क जागा ॥ मागध राजा जी मुनि  
वाहन भीती लै कै पथा ॥ बछ समान साना रे ॥ ११ ॥ भीम शोन करोनि

मिल॥ जीमुनवाहनमारीलकवणा॥ भानंधनेनियंमौन॥  
बुधीकार्यसाधोवें॥ दधि चिदुरह्मयेहेंकल्पना॥ वेशबाउगी  
विवचना॥ ईश्वरमांडाराच्यारता॥ गपीनकोष्ठानकरवे॥ दृ  
अनंतईश्वराचेक्षंद्रा॥ धमानवीनश्वरपुष्टुषा॥ सामान्यदिसतीपरि  
प्रकाशा॥ मुवनवईनसमाया॥ ईश्वरदंतप्रकाशवंता॥ येदावं  
तकीतिवंत॥ ईश्वरञ्जतारमन्तता॥ स्थूकस्थूकवेसताती॥  
गर्धपा॥ ईवांधोनीपांडवाते॥ लालसनेमिरउंगेलातेघो॥ अहं  
कारनसाहे॥ ईश्वराते॥ तेपांसीक्षालाविली॥ ८०॥ संभद्रेखोनिअं  
धः कारी॥ तस्करह्मयोनिबोप्साटकरी॥ व्यसनघुडेतंपांडवावरि॥

( २ )

११

७

वि०प० निमीत्युक्त्वा बेविनां ॥४१॥ अमीना जैसा बबू समर्थ ॥ इश्वर मृष्टी प्रा० प्रा०  
न भ्रंसंख्यात् ॥ देवप्रेरनि अगाध कृत्य ॥ स्वल्पा हातीयि तसे ॥४२॥  
प्रकनियां आरम्भ्य चरे ॥ शावण त्रासि लोजग देश्वरो ॥ ये काब्राह्मण  
ल्पुकुमरे ॥ कानि विर्जदिला ॥ त्रोत्यों लंकाके लिप्रसम ॥ औसी  
इश्वर महिमा परमा काष्ठ उत्कृष्टी न हो ॥४३॥ अद्ये वो निवृत्ति वा  
न्येनामा जीमु तिमारिला हो जप्ता ॥ रांड वाअंगी हो कर्दि म ॥ कला  
ने चालला वर्ण ॥४४॥ त्रिवृत्तुकुने फीम वाना गाजा वाढवी बहु  
माना ॥ हृष्टे जामु ने सीमाछुना ॥ स्वरा पित्ते असा दें ॥४५॥ विराट  
तोषे निर्जन्ती ॥ क्षणक्षणा अस्त्र्यर्थकरी ॥ हृष्टे उत्तप्त श्वीवरि ॥

“जोडपांचांसांश मंडल, धुले औ तेलवान्तो खावानीस्थिति नांपाल”

2

क्रोणकैसेनश्वरं ॥८७॥ एुदेकीचकाचेहननगस्वहकोकरीलभ्र  
मद्रोना। तेज़द्वत्तनिरोपण। अभृतप्रायपरिसावें। ८८। मुकेश्वर  
कवीन्द्रीवायं॥। नवदसमनेत्तुगर्वी। त्तुसुकरीसुखमोजनी॥। अ  
वगद्वाग्मसंताहें। ८९। इति श्रीविष्णुपदेश्वरता। कथाकृपपरमा  
मृत्ता। भृत्यांपत्तेऽमंड। ९०। इति श्री  
आदतेविश्वाटपदेश्वी। मुकेश्वर  
द्वितियेष्यायः। ९१। २ वाच्य। २४। कुनम३२६। श्रीकृष्ण  
विष्णुमस्त। श्रीगुरुहत्तात्रयपादुकापैषमस्त। श्रीरस्त्रीनाम  
शुद्धात्पृथ्वी। शुद्धात्पृथ्वी। शुद्धात्पृथ्वी।

विं प० श्रीशानदापरमेष्वरीयनमः ॥ सुधेष्ठा सहस्रनिधानी ॥ दुःसानेतु ॥ प्रा० अ०  
रव मानुनी ॥ वर्तन असतां यशसेनी ॥ विपत्ती तक्षाही मांडलेणांगा ॥ विराटा  
चासेनापती ॥ सुधेष्ठा चाबंधु कुमती की चकनामा पापमुर्ती ॥ मणिनी  
ग्रहोपातला ॥ ३ ॥ कृष्णा ज्ञवला ॥ नयनी ॥ हृदयमे दलेपंचबायंगी  
हृष्णो ज्ञेसी लावपय खामी ॥ गुजका बनि काघुर्जी ॥ आयोग्यस्थकी  
हुनायका ॥ बदरीनिक दहुकदी का ॥ स्वानि ज्ञेसामारी थडका ॥ मजो  
नियांज्यापती ॥ ४ ॥ अमृतवला ॥ नवला ॥ नवनांतवाढली निवाढी  
पंशीक सुधे-चीयांकाढी ॥ कही काताडी निधौरें ॥ ५ ॥ तेवी सुंदरसंगण  
वनिता ॥ आमावेगकी डाही वसतां ॥ कामीक मोघे प्रोवेसो वानां ॥ हुआश्चर्य  
तंवनो हुग्धा मगीनि लागेवोले वचनी ॥ यां प्रसदेया अवलोकनी ॥

(38)

३

४ विनष्टानापउदेभामनीतोजाकीतदेहानें॥७॥ ईचेजालेंअवलोकन।  
तनेत्रहारासीमदिरापाना। चूट्लेंहृपोपनिजाठवण। दारीरान्धीविस  
रलोभास्मरेविस्मरण। व्याजीवनि। लज्यामर्योदाउडविलीदोन्ही।

५८ मृदुमयन्वेवत्रजनिगिरोनीपटिलकेउनें॥८॥ अद्वृतमानजाअ  
विचार। नोचिअस्मुतसंचार। हृषकाविजीरवदतत। कंहर्षमर्प  
शांबिला॥१०॥ ईच्याजयनामृतापाल। पीनपूयोधरेआविंगनें। आरी  
रस्तोगच्याओजनें। भ्राउड़ी। भ्राउड़ी॥११॥ येरग्नेहृसैरंध्री।  
सांप्रतअसेमासाधरी। स्त्रीरवत्सदाचारी। पतीवृतादेविजे॥१२॥  
नेमानच्छेमाज्जियांवचनें। तुंवाबोधिजेधनेंदोनें। आंगीकारील  
दरीसमाधानें। ईछापुरवीआसुली॥१३॥ राजांगनेचानिगुडकारी।

५०

पंचाक्षीतें प्रबोधकरी॥ न्मणोसुंदरी परमं दिरी को मोगि सीञ्चवह ३० अ०  
सा॥ १४॥ पाहुतां तुझे त्रांग दिन्हु॥ चक्रवर्ती च अंगना बहुत तुम्हां  
सौंदर्ये समान॥ दक्षरमणी करो॥ १५॥ उखो सुलोचना दमयंती॥ र  
ती माधवी तपनी॥ चाचे चाचे ये दद्यज्ञा वापागती जागतो॥ १६॥ अं  
मना माजी वरिष्ठ॥ और सो बाल॥ १७॥ अपरी द्यादी पकाहो ती प्रष्ट॥ तुज  
सर्व प्रभेसन्मुदवी॥ १८॥ ईरन् त्रीयां साजा बहुतें पाहो निपावती  
आजा॥ दैवतं गोजा लियां माजा॥ १९॥ उपमा विअसेना॥ २०॥ आतं  
विचारो निखारी॥ मानेकर प्राणनाथ॥ हेमभं दिरी मोगकनित॥ र  
हुमं चकी पहुडेकां॥ २१॥ परम ही मोज्य दिव्य रहुतो लेववीन बहुशुघ्ने

५१

सुकृपद्मवीतगटिवसनें॥ परीघानकरीडोळसें॥ २०॥ घृतपात्रीत  
पीशीनजन्हें॥ तांबोलआसनचंदनसुमनें॥ चित्रविचित्रसुरनस  
नें॥ आंगरसंगेसुरवभागी॥ २१॥ नुजजाक्षयअैश्वर्यनिधी॥ लागला  
हरिद्रसयव्याधी॥ ज्ञातंमस्तुर्गीहिव्योषधी॥ सेउनिहार्दविजर॥ २२॥  
ज्ञातंप्रसन्नकरोनिमना॥ आवडीहित्राचिंगना॥ कीर्त्कजायाहेअ  
सिधाना॥ आजीपासुनप्रिमिरव  
॥ खाकरीनुसियापरिचारि॥ ज्ञातंज्यासेवका॥ माजीगणि  
कांजापुणीयां॥ २३॥ पायस्पत्तमनसुहात॥ हृष्यकरथाकरीमाते॥ श्रेय  
चैईमरतीयाते॥ वांचविष्याजेवीजसें॥ २४॥ उरेकोनिपापीस्तचीवा  
यां॥ द्रोपदीबोटवालीकानी॥ हुप्तेवाहेत्तरहेचकपाणी॥ संकटहरणी

(9)

२०

२

वि० १०

समर्थो॥२५॥मगहुपेते मंदस्तीति। पांच गंधर्व सोमेष्वनि॥ चुम्ही  
रक्षाकरोनिहृती॥ गंगोदकीला किनी॥२६॥ पनं हुज्जेपावंशद्विभं  
डला। बाल कई छीगगनफला। तेवीपनि चान्दीबाला। केवीला  
थिनंवकरि॥२७॥ नाचालनिसर्वप्रेक्षनि। तपेश्वरीरजालेचर्मो। जैसी  
याचाअभील्लाभमर्तुयेककरिसीमाव्या॥२८॥ मणीदेरवोनिशग  
झगीन॥ चालवीवरीप्तुलीहु। वसु नलभेपरिगममृत्य॥ नाकुली  
कपाविजे॥२९॥ भतेवीमिसिरु चीकुला॥ स्पौकरिनांपावसी  
मूरु॥ जेवीदीपकवच्छिताचानु॥ पनंगानेताकुली॥३०॥ औको  
निरांचाकीयेवचन॥ कीचकजलालाहुनाशन॥ हृष्णोमानेवारी  
कोण॥ बच्छकुउम्होगिनां॥३१॥ पांचैगंधर्व सांगसीगोद्धीतेवा

आ० ३०

३

रवीमाझीये दृष्टि॥ सूचेनिरके पृथ्वीनदी॥ समाजिनभी करते॥  
॥३३॥ देवगंधवै अथवा हैला॥ तुजलागी पातल्याबव समर्थ॥ तितु  
की चाच्याकरी न चाता अधक्षण न लगता॥ ३४॥ मासें निपाडे अतु बै  
ली॥ दुजाना हीं मुमड़की चाक पातल्या संबद्ध की॥ विभांडी न प्रतोपे॥ ३५॥

२९ विराटमाझात्यापिना॥ सूचे कर जान प्राया वारावर्या मजसमर्थ॥  
दुजाना हीं जाणपाँ॥ जीतां जाप निजा त्योरी तुंते प्रोगी न बक्काकूवी  
रक्षण करनि ज्ञापुलादरी॥ ३६॥ द्रोपदी ह्मगे औ  
करन्यना॥ वीस भुजाचारा वर्या करिता अभ्रीक्काढानमपरिवारे सीम०  
सजाडा॥ ३७॥ सहस्र मुजाचाका निवीय॥ जगति निरवी आपुलेंसौयी॥  
तोही असु पावला सूर्या न हुवद नीज्या परि॥ ३८॥ सुंदोप संदोषे बंधु

Joint Project of the  
Sant Gadge Ganesh Mandal, Bhiwadi and the  
Government of Rajasthan  
Digitized by srujanika@gmail.com

वि० प०

॥ आपुलाहरतीपावलेघटा ॥ अन्यायवने ताबधा ॥ इच्छकरीप्रयने  
॥ ४० ॥ हुमनिश्चंभरहाबकी ॥ ना कीह सोनिवा ईयुक्ती ॥ नुनेपन  
लाम्भूपातलाजवकी ॥ हामोनिचीन्हुउदलें ॥ ४१ ॥ औसेबोलतां  
याइसेनी ॥ कीचकक्षोषालाबहुपुग पंगा ऐसेघृतोस्तिपिलावल्ली ॥  
प्रज्वेव्वेत्ताधांवीनला ॥ ४२ ॥ एतिवृत्ताहारंगी ॥ कीचकमाडु  
पाहेव्यसनी ॥ हेंदेरबोनिय ॥ ४३ ॥ सवनकरीसहयोन्ये ॥ ४४ ॥ त्रि  
योअशाननमनादाना ॥ आरु ॥ ... दस्तक रथा ॥ कीचकाचीयांमहा  
व्यसना ॥ पञ्चुलीमानेसोडवी ॥ ४५ ॥ कुपामरितदीनानाथा ॥ ऐरि  
वांजालाजाक्षसदुवा ॥ कीचकेलादिनाचीहाता ॥ आडजालानाकुकी  
॥ ४६ ॥ आइहोलांविवाक्षुर्नी ॥ द्वौपरीनिवेनिगोषीपरति ॥

आ० अ०

३

६८

क्रपेनेवोक्तलागमती॥ महामनिष्ठवारि लें॥ ४६ पुढेकीचकेताडितांला  
 ता॥ पुढतिरावलास्तुर्यसुना॥ कीचकलोटुनियांवेक्त॥ पृथ्वीगच्छिपाडि  
 ला॥ अंतरेबोलतसेसुंदरा॥ सुधेष्टोच्यापाठविमंदिरा॥ तुज्ञातीच्या  
 अंतरा॥ बाधिवसेजापाए॥ उठानिकविळितांपांचाच्ची॥ शंडुनिच्यालि  
 लानिराकी॥ धांवोनियतासमेलवकी॥ सपालकीदेरविली॥ ४७ वासमेसु  
 पाढमहाजना॥ धर्मपार्थकी  
 यराहटला॥ ५०॥ कृष्णयेतां  
 वदतमसतांदुजेन॥ परमभव्या  
 सी॥ कीचकधाविनलापार्गीसि  
 गलातताडुनियांकुसीज्ञावदनासाडिली॥ ५१॥ कीचकमयतमा  
 सखानी॥ इब्दबोलोनइकनिकोण्ही॥ धर्मशुजामधोवदनि॥ झीमा  
 ऊनविलोकी॥ ५२॥ द्वैपहीहम्पेणविरादराया॥ वसोआलेंतुसीयां

वि०प०

घयां॥ लुप्तेऽुदेभन्यायकर्तया॥ नीश्चैकैसीनकर्विशी॥ पञ्चा॥ विराट्  
लुप्तेऽन्वित्वदित्रा॥ नकर्त्तेप्रगटं गुह्यमंत्र॥ कैसे चक्रांतीचेसुत्रां  
॥ ५४॥ प्रथममिक्तोनीसंवादी॥ मंगप्रवर्णेजरीनिवेधी॥ तेष्येऽते०  
सीउपाधी॥ आंगीघडेल्लो॥ ५॥ सुखवस्त्रेऽस्तुना॥ द्रौ  
पदीकरीदीर्घनदना॥ हुंदे॥ गजेन्द्र॥ वृक्षपुढविलोकी॥ धधा०  
कंकभाणीब्रह्मनक्षाम्बुधं॥ यवीराक्षायाचेउसिषोस्व  
ल्पकाक्षाप्राप्ननादापावेला॥ ५॥ उद्देतीबोलेमहाभनी॥ जावो  
न्तिसांगेसुधेष्टाप्रनी॥ तेंवंधुतेविवेकेष्टुति॥ हीतोपदेशवोधीजा॥ जी  
॥ ५५॥ अपवभुद्गर्वेवोक्तकिन॥ सुधेष्टातेंजापवीमानगतेहुपेया  
यामनोरथा॥ नकहतंजनर्थकरीलग्नपथा॥ नात्रैकसीत्यन्वेक्षना॥ तरि

प्रा०प्र०

संस्कृत  
संस्कृत

३४

वो येर्वल्लुजामाया प्रयेमानेभाजानचना न चउजाशमुजोगं ॥६०॥  
इपहीरवेदपावानिवितील्लुशेवरवीनिवडिलीरीतीगजेजैसेकमे  
करितीनैसपावपि क्षमागु ॥६१॥ कीचकभगिनीतेंह्लणेंगसैरंध्री  
तेस्त्रिकवयां ॥ अंगसंगालेह्लिप्रायां उगनंदीभवथा ॥६२॥ यानंतरेनि  
दाकाकी ॥ कृष्णपात्तलीधर्मज्ञवत्तीह दयवीठेनिपाणीतक्षीग्नोकक  
प्रिभक्तोषे ॥६३॥ तुमचेपुरष्टपायजा ॥ नामनापातेंबुडविले ॥ रंकचही  
रंकहजाऊंमायागकेल्लाप्रार् ॥ तथाहृपदाच्चिआमुजामभगिनी  
होयकृष्णराजा पांचापांडवाचीमाजा अस्तु शुभापुंडुची ॥६४॥ समे  
सदेखांसमसा ॥ कीचकेमानेमार्दिलीलोतो ॥ आतांतुमचापुरषाथी ॥  
कोणायेइलउपेगा ॥६५॥ धारवंडववनानेलाळिलेमनिवांतकवचानेमा

(6)

२५

प

वि० ए०

रिलें। अथारवांडवनारेंजाच्छिलें। निरांतकवच्यातेमारिलें। तेऽवद्ये ४० प्र०  
चिवार्योगलें। मजताडिलेकीचकें। ६७॥ दिव्यसत्रानेवधिलें। युष्टी  
दिवातेंतोषविलें। तेऽवद्येचिवार्यांगलें। मजताडिताकीचकें। ६८॥  
हिंडबद्यातेमारिलें। किमीतिन्याच्चरातेवधिलें। तेऽवद्येचिवार्यांगो  
लें। मजताडितांकीचकें। ६९॥ पोलोमताकीकियांवधिलें। उयंदृशातें  
विट्ठिलें। तेऽवद्येचिवार्यां। जताडितांकीचकें। ७०॥ माकेले  
राजसुयशा। दान्तितोषविलें। ना। तेऽवद्येचिकेष्ठंसुन्या। म  
जताडितांकीचकें। क्षेवनीजोंकोनियांपण। हुरविष्णकौरवाचामान।  
तेऽवद्येचिकेष्ठंसुन्या। मजताडितांकीचकें। ७१॥ तुमच्याघनुष्य  
आपीबापाम। वेगीब्राह्मणदेवनाम् पुत्रषादेवतांकुञ्जंगना। नी

चपुरवेगजिलें। ७३। जोडीयेकानेनिर्देवतना। करीनलाचि  
तीपवित्रजन। स्पष्टलकीनकदुष्टश्वान। पांचाळीतेंलुगोनी। ७४।  
धर्महृषेऽकगुद्यार्थ। सीमसेनाजागवीमान। करीलदुष्टाचानि:  
गत। अधिकाशनलगतां। ७५। त्यारीनसदिवसगगरेण। उरलेहुणो  
निपडिलंगाहुपेण। यहुविकीनकजातंप्राण। तेचिकाळीजागपां।  
॥७६॥ आतंस्वस्थकरीमन। कृतांतरेकांसीभसेन। करीलकीनक  
चेहनन। हेन्निधोनीजागपां। त्रेनोदयसंवादति। द्राघनस  
हनाचायेकांनी। ७७। वतेष्येविदेवगती। सीमसेनपानला। ७८। द्वौप  
दीक्षोकेअतिसम्मन। नेत्रीढ़वति। आः शृंपात् शीमहुणेंहोर्नस्थ  
॥विचारवंतसुजागेण। ७९॥ दुआसनंकवल्लिकरा। मैथिवंदीधला

२४

२५

२६

वि० ८० अपार कुद्रा॥ तथा जैसे मानु निदेषा॥ अमृत्यु गांगी लजावदें॥ ०॥ शा० अ०  
असो जेन देवाल सीउन ती॥ तिहु काहु नहु जानु ती॥ उद्गुकु पाकरी  
लहरी॥ तरि हही संकट परिद्वारा॥ १॥ दो पहले गंप्ता पूरुद्वारा॥ त्रिसुव दी  
नी बब्स मुद्रा॥ को पया जागरा॥ रद्रा जैसे समई प्रासिला सी॥  
मध्या की ज्ञक पड़िला सोडा॥ जो सजन की समई सभै प्राप्ता गु  
कि वी काहु गुड़ पूर्वज सेतो सा॥ २॥ विराट वालन शक सोते॥ गुण  
स्था तुस्तीयां दिचारव तो को॥ तुजा त्रोन दिसे माने॥ दुःख रेकं ठीमि  
बावया॥ अझा नवाला चासंकटि॥ रिघतां नये तु मचा पाठी॥  
दुनीता हिला जग जे वी॥ इस्ता मासा कुंब स्त्रा॥ वध स्थव्युगुनि जा  
गि के न्यटी॥ जामी लड्डे रेये काली॥ मी सहू गेवो वेल्हा छी॥ विंता न

२५

करीमानसें॥८॥ कीचककरीलबग्गाकारा॥ नरीओकेयेककीचल  
 ॥ भवलैबुनहनिमानाका मिथादाव्दमोहावा॥ ९॥ पाक शावेयेकां  
 नस्थकी॥ तुवांयोदेनिःशाकाच्ची॥ मीहियेउनियांजवकी॥ इषानुज्ञापु  
 दवीमा॥ १०॥ कीचकतेयेकनिर्त्तजयना॥ माज्जेहोईलआगभन्नपुढा  
 वर्जिजेकथमा॥ पुट्टोवर्त्ते गजकर्णना तेत्रेकालसमस्ते॥ ११॥ निः  
 शाकमुनियांजागा॥ श्रीमगे॥ १२॥ दिनाङ्गोपदीआजीसुधेष्टा॥  
 जीयेस्थकीउपविष्टा॥ १३॥ रोबोसुजापी॥ अस्युंत्रावडी  
 माज्जियेमनी॥ होउनिमाज्जीयाद्यद्युचोपती॥ मञ्जसमानताक्षेवं  
 ॥ १४॥ कैंचेगंधवैकैंयापति॥ असंसुबोलजीमहासती॥ कीचक  
 नियेसुखसंपति॥ संपदाभोगीमनेजा॥ १५॥ रवेदसवोनिजंतरी॥

६

Sanskrit Manuscript Mandal, Dhule and the  
 Library of the  
 Government of Maharashtra

वि०प० बाह्यकृतीमहस्यकरी। सुधेष्ठाटाकी पीटीकनि। मुखविचारी। ३०३०  
हृष्णोनियां। ४॥ वेशजानसेनाकम्भ्यकाळु॥ नयेवेचित्तकनकान्यङ्ग  
॥ कीचक संगेसुरवैफलु॥ अग्रहसंडोनिमान्तें॥ ५॥ कीचकनिमु  
नीयाभना। सुरापावृप्राभना॥ तदंजानियान्तीयांसदनाभनि॥  
शाकाच्छीआणावें॥ ६॥ खावरिसरीयारात्रका॥ कीचकपातलाउता  
वेक्षा॥ विरहुतापेगाच्छंगुङ्गा॥ सरिनादिसेविकासी॥ ७॥ मद्यपाने  
शाकलीहुकी॥ त्रिक्षकवद्धान्॥ यान् लहु॥ भगिनीसहृष्टेहोरटी॥  
नातमेशुनामेलवी॥ ८॥ प्रबोधवीजाजायुक्ती॥ अपारवोक्तीन्द्रघनसंप  
ती॥ आंगनाहोवेनिकामती॥ पुरवीक्षेतुंकरि॥ ९॥ तेहृष्टेमाझी  
यक्षात्तसदनि॥ अंचिबोधवीमध्यान्यनी॥ हृष्णोनिवैसविलिदिन्ही

१०८.



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : [rajwademandaldhule@gmail.com](mailto:rajwademandaldhule@gmail.com)